बाबा मुक्तानन्द की सिखावनी

४

ऐसा चमचमाता परम नीलेश्वरी का रूप ध्यान में प्रत्यक्ष आने वाला है। हे सिद्धविद्यार्थियो और विद्यार्थिनियो! आप इसका दर्शन कर सकते हैं। लेकिन यह याद रखना चाहिए कि इतने महान दर्शन के लिए आपका रहन-सहन कितना श्रेष्ठ होना चाहिए। आपमें पात्रता होनी चाहिए। आपकी संगति, भाषा, आपके सभी विचार परमात्मामय होने चाहिए। जिसको नील-दर्शन हो गया वह कितना पुण्यात्मा है!

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०२२], पृष्ठ १५३।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।